अथवा

उत्सवप्रियता मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। यह उसकी सामाजिकता की सहज वृत्ति की परिचायक है।

5. 'मित्रता' शीर्षक निबंध का मूल प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

'कालिदास का भारत' शीर्षक निबंध की विषयवस्तु का विवेचन कीजिए।

6. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' ***अथवा*** 'साहित्य' शीर्षक निबंध के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। 10

2022

HINDI

(Modern Indian Language)

(Hindi Nibandh Sahitya)

Full Marks : 80

Time : Three hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

(क) किसने बेकन की पद्धति पर निबंधों में विचारात्मकता का सूत्रपात किया था?

(ख) राजा रघु की राजधानी कहाँ थी?

(ग) 'मोहन मेले' का उल्लेख किस निबंध में हुआ है?

(घ) डेमेट्रियस कहाँ का बादशाह था?

(ङ) 'मॉडर्न रिव्यू' में किसका लेख छपा था?

(च) बड़े आदमियों के तीन रोग क्या-क्या हैं?

(छ) किस ग्रंथ में निर्वैर, सत्य और अक्रोध को सब वर्णों का सामान्य धर्म कहा गया है?

(ज) बालमुकुंद गुप्त द्वारा लिखित आपके पठित निबंध का नाम क्या है?

(झ) 'चिन्तामणि' किनका निबंध-संग्रह है?

(ञ) द्विवेदी युग के एक प्रसिद्ध निबंधकार का नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2×5=10

(क) बेकन के निबंध कब प्रकाशित हुए थे? उनके निबंध की एक विशेषता बताइए।

(ख) 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः' में निहित भाव का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) बाबू श्यामसुंदर दास की साहित्यिक देन का उल्लेख कीजिए।

(घ) सच्ची मित्रता के गुणों को लिखिए।

(ङ) निबंधकार को दीनबंधु ऐण्ड्रूज से मिलने का अवसर कब और कहाँ मिला था?

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं चार*** के उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) यात्रावृत्त और रिपोर्ताज में क्या अंतर है?

(ख) राजा रघु की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

(ग) 'परोक्तं न मन्यते' का गुण या अवगुण किनमें और क्यों समान रूप से रहता है?

(घ) दीनबंधु ऐण्ड्रूज के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

(ङ) साहित्य के व्यापक अर्थ के बारे में लिखिए।

(च) "नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है।" पठित पाठ के आधार पर विवेचन कीजिए।

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) गदहा पीट घोड़ा नहीं हो सकता। जिनमें किसी गुण का लेश नहीं है वे किसी तरह गुणशाली न हो सकेंगे, लोगों के इस कहने को हम किसी-किसी अंश में सत्य मानते हैं।

अथवा

संसार का जब यही रंग है, तो ऊँट पर चढ़नेवाले सदा ऊँट पर ही चढ़े, यह कुछ बात नहीं।

(ख) कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके गुण-दोष को कितना परखकर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसका पूर्व आचरण और प्रकृति आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करेंगे।